इस्लाहे क़ल्ब के लिये एक रहनुमा तहरीर

बद गुमानी

इस किताब में है :

★ नुक़्सान उठानेवाला ताजिर ★ गुमान किसे कहते हैं ?
★ बद गुमानी से बचिये ★ बद गुमानी पर हुक्मे शर-ई कब लगेगा ?
★ बद गुमानी के इलाज ★ दूसरों को बद गुमानी से बचाइये

इन के इलावा भी बहुत सारे मौज़ूआत

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए इस्लाही कुतुब

मक्त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बद गुमानी

येह रिसाला **(बद गुमानी)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात ।

MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

इस्लाहे क़ल्ब के लिये एक रहनुमा तहरीर

बद गुमानी

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद-1

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ آلک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : बद गुमानी
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)
सने त़बाअ़त : जमादिय्युस्सानी सिने 1428 हिजरी
बमुत़ाबिक़ जुलाई 2007 इस्वी

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मक-त-बतुल मदीना : 1st Floor, सीलेक्टेड हाउस, तीन दरवाजा, अलीफ की मस्जिद के सामने, अहमदआबाद ● फोन : 25391168

मक-त-बतुल मदीना : 421, मटीया महेल, उर्दू बाजार, जामे मस्जिद, देहली फोन : 011-23284560

मक-त-बतुल मदीना : 19,20, मुहम्मदअली रोड, मांडवी पोस्ट ओफीस के सामने, बम्बई फोन : 022-23454429

E.mail.maktaba@dawateislami.net
www.dawateislami.net
ph:079 25 39 11 68

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

"बदगुमानी से बचें" के 13 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "13 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।
(अल मो'जमुल कबीर, लित्त़बरानी, अल ह़दीस:5942, जिल्द:6, स-फ़ह़ा:185)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व **(2)** सलात और **(3)** तअ़व्वुज़ व **(4)** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी स-फ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। **(5)** रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा। **(6)** ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और **(7)** क़िब्ला रूमुत़ा-लआ़ करूंगा **(8)** कु़रआनी आयात और **(9)** अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा **(10)** जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और **(11)** जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा। **(12)** (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। **(13)** किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार*** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على احسانه و بفضل رسوله तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने खू़बी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का कि़याम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** भी है जो ***दा'वते इस्लामी*** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ा़लिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

(5) शो'बए तराजिमे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"अल मदीनतुल इल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब–र–कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब–र–कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म–दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा–लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़–मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

र–मज़ानुल मुबारक सिने 1425 हिजरी

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस ना पाएदार दुन्या में ''उ़म्रे अ़ज़ीज़ के चार दिन'' गुज़ारने के बा'द हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा जिस की वह़शत आमेज़ तन्हाइयों में न जाने कितना अ़रसा हमारा क़ियाम होगा। फिर जब मह़शर बपा होगा और हम अपने ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सफ़रे ज़ीस्त (या'नी ज़िन्दगी के सफ़र) के अह़वाल सुनाने के लिये ह़ाज़िर होंगे तो हमें अपना हर छोटा बड़ा अ़मल अपने नामए आ'माल में लिखा हुवा दिखाई देगा जैसा कि क़ुरआने अ़ज़ीम, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इर्शाद होता है :

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

(पारह:30, अज़्ज़िल्ज़ाल : 6,7,8)

इस के बा'द बारगाहे रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से परवानए बख़्शिश जारी होगा या مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुख़ूले जहन्नम का हुक्म मिलेगा। (نَسْئَلُ الْعَافِيَةَ या'नी हम आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी !
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

(अरमुग़ाने मदीना अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बदी या नेकी के इर्तिकाब में ज़ाहिरी आ'ज़ाए जिस्मानी म-सलन हाथ, पाउं, आंख वग़ैरा का किरदार सब पर वाज़ेह है मगर इस त़रफ़ उ़मूमन हमारी तवज्जोह नहीं होती कि सीने में धड़कने वाला दिल भी हमारे नामए आ'माल में नेकियों या गुनाहों के इज़ाफ़े में आ'ज़ाए ज़ाहिरी के साथ बराबर का शरीक है। चुनान्चे जब ज़ाहिरी आ'ज़ाए जिस्मानी से इन के अफ़्आ़ल का ह़िसाब लिया जाएगा तो येह दिल भी शरीके ह़िसाब होगा। कुरआने पाक में इर्शाद होता है :

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ○

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

(पारह: 15, बनी इस्राईल :36)

इस आयत के तह़्त अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी

कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 671 हिजरी) तफ़्सीरे कुरतुबी में लिखते हैं कि ''या'नी इन में से हर एक से उस के इस्ते'माल के बारे में सुवाल होगा, चुनान्चे दिल से पूछा जाएगा कि इस के ज़रीए क्या सोचा गया और फिर क्या ए'तेक़ाद रखा गया जब कि आंख और कान से पूछा जाएगा तुम्हारे ज़रीए क्या देखा और क्या सुना गया ।''

(अल जामेउ़ल अह़कामिल कुरआन, सूरतुल अस्रा, तह़्त:36, जिल्द:5, स-फ़ह़ा:188)

जब कि अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलोसी बग़्दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1270 हिजरी) तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में इसी आयत के तह़्त लिखते हैं कि ''येह आयत इस बात पर दलील है कि आदमी के दिल के अफ़्आ़ल पर भी इस की पकड़ होगी म-सलन किसी गुनाह का पुख़्ता इरादा कर लेना..या..दिल का मुख़्तलिफ़ बीमारियों म-सलन कीना, ह़सद और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा में मुब्तला हो जाना,.....हां उ़-लमाअ ने इस बात की तसरीह़ फ़रमाई कि दिल में किसी गुनाह के बारे में महज़ सोचने पर पकड़ न होगी जब कि उस के करने का पुख़्ता इरादा न रखता हो ।''

(रूहुल मआ़नी, पारह:15, अल अस्राअ, तह़्त: 36, जिल्द:15,-सफ़ह़ा:97)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

दिल को अ़-रबी ज़बान में ***क़ल्ब*** (या'नी बदलने वाला) कहते हैं और इसे क़ल्ब कहने की वजह येह है कि येह मुख़्तलिफ़ अवकात में महमूद व मज़मूम (या'नी पसन्दीदा व ना पसन्दीदा) दोनों क़िस्म की कैफ़िय्यात से दोचार होता है।

(मिरक़ातुल मफ़ातीह, किताबुल ईमान, जिल्द:1, स-फ़हा: 304)

इस ह़क़ीक़त को फ़रमाने न-बवी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام में यूं बयान किया गया है : "दिल की मिसाल उस पर की सी है जो मैदानी ज़मीन में हो जिसे हवाएं ज़ाहिर बातिन उलटें पलटें।" (अल मुस्नदिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़दीस अबी मूसा अल अश्अ़री, अल ह़दीस:19778, जिल्द:7, स-फ़हा:178)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अगर हम अपने दिल पर ग़ौर करें तो येह नतीजा सामने आएगा कि कभी इस पर रह़म ग़ालिब होता है और कभी सख़्ती इसे जकड़ लेती है, कभी समुन्दरे सख़ावत ठाठें मारता है तो कभी बुख़्ल (या'नी कन्जूसी) का तूफ़ान अपनी हलाकत ख़ैज़ियां दिखाता है, कभी तो आजिज़ी का ऐसा पैकर कि कुत्ते को भी ह़क़ीर न जाने और कभी ऐसा मु-तकब्बिर कि बड़ों बड़ों को ख़ातिर में न लाए, कभी तो ऐसा मुख़्लिस कि अपना नेक अ़मल ज़ाहिर होने पर परेशान हो जाए और कभी ऐसी ह़ालत कि ता'रीफ़ न होने पर मलाल

महसूस करे, कभी ऐसा साबिर कि बड़ी से बड़ी मुसीबत पर उफ़ तक न करे और कभी ऐसी बे सब्री कि ज़रा सी तक्लीफ़ पर वावेला मचा दे, कभी तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ऐसा ख़ौफ़ कि गुनाह करने के तसव्वुर ही से घबराए और कभी ऐसी ग़फ़्लत कि बड़े बड़े गुनाह करने के बा'द भी आसारे नदामत दिखाई न दें, कभी तो इश्के़ रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ऐसा जज़्बा कि ज़बाने हाल से पुकार उठे :

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रहमते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

और कभी दुन्या की महब्बत का ऐसा ग़-लबा कि इसी को अपना सब कुछ समझ बैठे, कभी तो मुसल्मानों की खै़र ख़्वाही का ऐसा जज़्बा कि खुद नुक़्सान उठा कर भी दूसरों का भला करे और कभी ऐसा खुद ग़र्ज कि अपने फाइदे के लिये मुसल्मान भाई को नुक़्सान पहुंचाने से भी दरेग़ न करे, कभी तो ऐसा इस्तिग़ना (या'नी बे नियाज़ी) कि जाए इ़ज़्ज़त पर बा वुजूदे इस्रार न बैठे और कभी ऐसी हुब्बे जाह कि नुमायां जगह न मिलने पर मुंह फुलाए बल्कि उस महफ़िल से ही रुख़्सत हो जाए, कभी तो ऐसी क़नाअ़त कि हाजत से ज़ाइद माल मिले भी तो लेने पर तय्यार न हो और कभी ऐसी लालच कि माल की फ़िरावानी होने के बा वुजूद माल बढ़ाने की जुस्तुजू में लगा रहे, कभी तो ऐसी हया कि तन्हाई में

भी ख़िलाफ़े ह़या काम न करे और कभी ऐसी बेबाकी कि लोगों के सामने भी बे ह़याई के काम करने से न शरमाए। علی ھذا القیاس

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिल में होने वाले इन्क़िलाबात इन्तिहाई तश्वीश नाक हैं लिहाज़ा हमें इस की निगह दाश्त में हरगिज़ कोताही नहीं बरतनी चाहिये। इस के लिये हमें अव्वलन बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में क़ल्बे सलीम (या'नी अच्छी बातों का असर क़बूल करने वाले दिल) का सुवाल करना चाहिये। हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन के क़ल्बे अत़हर से जारी होने वाले रूह़ानी चश्मों से सारा आ़लम सैराब हो रहा है, वोह भी अल्लाह तआ़ला से इस त़रह़ दुआ़ किया करते : ''یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِکَ'' या'नी ऐ दिलों को फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन पर क़ाइम रख।''

(अल मुस्नद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, मुस्नदे अनस बिन मालिक, अल ह़दीस:12108, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:225)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ के साथ साथ इस्लाह़े क़ल्ब के लिये अ़-मली कोशिश करना भी बहुत ज़रूरी है। इस के लिये हमें सब से पहले अपने दिल का मुह़ा-सबा करना चाहिये कि फ़िल वक़्त हमारे दिल पर जिन सिफ़ात का ग़-लबा है इन में कितनी सिफ़ाते ह़-सना (या'नी अच्छी सिफ़ात म-सलन सख़ावत, इख़्लास,

रहूम वग़ैरा) हैं और कितनी सय्यिअह (या'नी बुरी म-सलन ह़सद, तकब्बुर, बुग़्ज़, बद गुमानी वग़ैरा)? फिर नतीजा सामने आने पर अच्छी सिफ़ात की बक़ा के लिये कमर बस्ता हो जाएं और बुरी सिफ़ात से छुटकारे की मश्क़ शुरूअ़ कर दें।

ज़ेरे नज़र किताब "**बद गुमानी**" में दिल को आ़रिज़ होने वाली एक सिफ़त ***बद गुमानी*** के बारे में मा'लूमात फ़राहम करने की कोशिश की गई है म-सलन गुमान किसे केहते हैं ? इस की कितनी अक़्साम हैं ? बदगुमानी कब जाइज़ है और कब ना जाइज़ ? इस पर शर-ई हुक्म कब लगेगा ? वग़ैरहा नीज़ इस की हलाकत ख़ैज़ियों के बयान के बा'द इलाज के त़रीक़े भी दर्ज कर दिये गए हैं। इस किताब को मुरत्तब करने के लिये क़ुरआने मजीद, इस की **8** तफ़ासीर,**10**क़ुतुबे अह़ादीस, इन की **5** शुरूह़ात, फ़तावा अम्जदिय्या, फ़तावा र-ज़विय्या, फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) और **12** दीगर क़ुतुब से मवाद लिया गया है, इलावा अज़ीं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के ***निगरान*** के बयान "**बद गुमानी**" से भी भरपूर इस्तिफ़ादा किया गया है। इस किताब में **5** आयाते क़ुरआनिया, **20** अह़ादीसे मुबा-रका और **7** ह़िकायात शामिल हैं।

उम्मीदे वासिक़ है कि इस्लाहे क़ल्ब के सिलसिले में येह किताब बहुत मुफ़ीद साबित होगी, إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना ***शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ***फ़तावा र-ज़विय्या*** जिल्द 23 स-फ़हा: 624 ता 626 पर लिखते हैं : "**मुहर्रमाते बातिनिय्या** (बातिनी मम्नूआत म-सलन) **तकब्बुर** व **रिया** व **उजब** (या'नी गुरूर) व **हसद** वगैरहा और उन के **मुआ-लजात** (या'नी इलाज) कि इन का इल्म भी हर मुसल्मान पर अहम्म फ़राइज़ से है ।" इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुता-लआ की तरग़ीब दे कर सवाबे जारिय्या के मुस्तहक़ बनिये । अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश**" करने के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल करने और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ***दा'वते इस्लामी*** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अता फ़रमाए ।

امين بِجاهِ النَّبِيِّ الْامين صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
1	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	18	24	मुसल्मान से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब है	51
2	नुक़्सान उठाने वाला ताजिर	18	23	इ़बादत गुज़ार फ़क़ीर	51
3	कसरते गुमान की मुमा-न-अ़त	21	24	गुमानों से बचो	53
4	गुमान किसे केहते हैं ?	22	25	सातवां इलाज	54
5	गुमान की अक़्साम	23	26	सलामती की राह	55
6	बद गुमानी से बचिये	29	27	आठवां इ़लाज	56
7	बदगुमानी पर हुक्मे शर-ई कब लगेगा?	30	28	साल भर की मह़रूमी	57
8	हलाकत ही हलाकत	34	29	नवां इ़लाज	58
9	सौदागर की तौबा	39	30	दसवां इ़लाज	58
10	बद गुमानी करने वाली कनीज़	42	31	ग्यारहवां इ़लाज	59
11	वली की त़ाक़त	44	32	बारहवां इ़लाज	59
12.	ख़ुश रंग सेब	45	33	दूसरों को बद गुमानी से बचाइये	61
13	शाही दरबार में सिफ़ारिश	47	34	येह मेरी ज़ौजा है	62
14	बद गुमानी के इ़लाज	48	35	एरन्डी का तेल	64
15	पहला इ़लाज	48	36	आबे ज़मज़म	65
16	दूसरा इ़लाज	48	37	म-दनी माहौल अपना लीजिये	66
17	तीसरा इ़लाज	49	38	फ़ैश्नेबल नौ जवान की तौबा	67
18	चौथा इ़लाज	49	39	मआख़ज़ो मराजेअ़	72
19	पांचवां इ़लाज	50	40	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	73
20	छटा इ़लाज	50	41	याद दाश्त	73
21	अच्छा गुमान इ़बादत है	52			
22	बद गुमानी पर न जमे रहो	52			
23	अच्छी सूरत पर मह़मूल करो	55			

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۙ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : ''ऐ लोगो ! बेशक ब रोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।''

(फ़िरदौसुल अख़्बार, अल हदीस:8210, जिल्द: 2, स-फ़हा:471)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नुक़्सान उठाने वाला ताजिर

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक मस्जिद में नमाज़ अदा करने गया । वहां मैं ने देखा कि एक मालदार ताजिर बैठा है और क़रीब ही एक फ़क़ीर दुआ मांग रहा है : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! आज मैं इस तरह का खाना और इस क़िस्म का हल्वा खाना चाहता हूं ।'' ताजिर ने येह दुआ सुन कर **बद गुमानी** करते हुए कहा : ''अगर येह मुझ से केहता तो मैं इसे ज़रूर खिलाता मगर येह बहाना साज़ी कर रहा है और मुझे

सुना कर **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ कर रहा है ताकि मैं सुन कर इसे खिला दूं, वल्लाह ! मैं तो इसे नहीं खिलाऊंगा ।'' वोह फ़क़ीर दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर एक कोने में सो रहा । कुछ देर बा'द एक शख़्स ढका हुवा त़बाक़ ले कर आया और दाएं बाएं देखता हुवा फ़क़ीर के पास गया और उसे जगाने के बा'द वोह त़बाक़ ब सद आ़जिज़ी उस के सामने रख दिया । ताजिर ने ग़ौर से देखा तो येह वोही खाने थे जिन के लिये फ़क़ीर ने दुआ़ की थी । फ़क़ीर ने ह़स्बे ख़्वाहिश इस में से खाया और बक़िय्या वापस कर दिया ।

ताजिर ने खाना लाने वाले को अल्लाह तआ़ला का वासित़ा दे कर पूछा : ''क्या तुम इन्हें पहले से जानते हो ?'' खाना लाने वाले ने जवाब दिया : ''ब ख़ुदा ! हरगिज़ नहीं, मैं एक मज़्दूर हूं मेरी ज़ौजा और बेटी साल भर से इन खानों की ख़्वाहिश रखती थीं मगर मुहय्या नहीं हो पाते थे । आज मुझे मज़्दूरी में एक मिस्क़ाल (या'नी साढ़े चार माशे) सोना मिला तो मैं ने उस से गोश्त वग़ैरा ख़रीदा और घर ले आया । मेरी बीवी खाना पकाने में मस्रूफ़ थी कि इस दौरान मेरी आंख लग गई । आंखें तो क्या सोईं, सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मुझे ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वए ज़ैबा नज़र आ गया, मैं नज़्ज़ारए महबूब में गुम था कि लबहाए

मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "**आज तुम्हारे अ़लाक़े में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक वली आया हुवा है, उस का क़ियाम मस्जिद में है। जो खाने तुम ने अपने बीवी बच्चों के लिये तय्यार करवाए हैं उन खानों की उसे भी ख़्वाहिश है, उस के पास ले जाओ वोह अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ खा कर वापस कर देगा, बक़िय्या में अल्लाह तआ़ला तेरे लिये ब-र-कत अ़त़ा फ़रमाएगा और मैं तेरे लिये जन्नत की ज़मानत देता हूं।**" नींद से उठ कर मैं ने हुक्म की ता'मील की जिस को तुम ने भी देखा।

वोह ताजिर केहने लगा : "मैं ने इन को इन्ही खानों के लिये दुआ़ मांगते सुना था, तुम ने इन खानों पर कितनी रक़म ख़र्च की ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "**मिस्क़ाल भर सोना।**" इस ताजिर ने उसे पेशकश की : "क्या ऐसा हो सकता है कि मुझ से दस मिस्क़ाल सोना ले लो और उस नेकी में मुझे एक क़ीरात का ह़िस्सा दार बना लो ?" उस शख़्स ने कहा : "**येह ना मुम्किन है।**" उस ताजिर ने इज़ाफ़ा करते हुए कहा : "अच्छा मैं तुझे बीस मिस्क़ाल सोना दे देता हूं।" उस शख़्स ने अपने इन्कार को दोहराया ह़त्ता कि उस ताजिर ने सोने की मिक़्दार बढ़ा कर पचास फिर सौ मिस्क़ाल कर दी मगर वोह शख़्स अपने इन्कार पर डटा रहा और केहने लगा : "वल्लाह ! जिस शय की ज़मानत

रसूले अक्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दी है, अगर तू उस के बदले सारी दुन्या की दौलत भी दे दे फिर भी मैं उसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, तुम्हारी क़िस्मत में येह चीज़ होती तो तुम मुझ से पहल कर सकते थे लेकिन अल्लाह तआ़ला अपनी रह़मत के साथ ख़ास करता है जिसे चाहे ।'' ताजिर निहायत नादिम व परेशान हो कर मस्जिद से चला गया गोया उस ने अपनी क़ीमती मताअ़ खो दी हो ।

(रौज़ुर्रियाह़ीन, अल ह़िकायतिस्सलासून बा'दस्सला-स मिअतह, स-फ़ह़ा:277, मुलख़्ख़सन)

कसरते गुमान की मुमा-न-अ़त

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ز اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है ।

(पारह :26, अल हुजुरात :12)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह अबू उ़मर बिन मुह़म्मद शीराज़ी बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 791 हिजरी) कसरते गुमान से मुमा-न-अ़त की ह़िक्मत बयान करते हुए तफ़्सीर बैज़ावी में लिखते हैं : ''ताकि मुसल्मान हर गुमान में मोह़्तात़ हो जाए और ग़ौरे फ़िक्र करे कि येह गुमान किस क़बील से है।'' (तफ़्सीर बैज़ावी, पारह: 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 12, जिल्द: 5, स-फ़ह़ा: 218)

इस आयते करीमा में बा'ज़ गुमानों को गुनाह क़रार देने की वजह बयान करते हुए इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْهَادِىْ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 606 हिजरी) लिखते हैं : "क्यूंकि किसी शख़्स का काम देखने में तो बुरा लगता है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता क्यूंकि मुम्किन है कि करने वाला उसे भूल कर कर रहा हो या देखने वाला ग़-लती पर हो।" (अत्तफ़्सीरुल कबीर, पारह: 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 12, जिल्द:10, स-फ़ह़ा:110)

गुमान किसे केहते हैं ?

हर वोह ख़याल जो किसी ज़ाहिरी निशानी से ह़ासिल होता है गुमान केहलाता है। म-सलन दूर से धुंवां उठता देख कर आग की मौजूदगी का ख़याल आना।

(मुफ़्रिदात इमाम राग़िब, स-फ़ह़ा:539, माख़ूज़न)

गुमान की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बुन्यादी त़ौर पर गुमान (ज़न) की दो क़िस्में हैं :

(1) हुस्ने ज़न (या'नी अच्छा गुमान)

(2) सूए ज़न (या'नी बुरा गुमान, इसे बद गुमानी भी केहते हैं)

फिर इन में से हर एक की दो क़िस्में हैं :

चुनान्चे हुस्ने ज़न कभी तो **वाजिब** होता है जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ अच्छा गुमान रखना और कभी **मुस्तहब** जैसे मोमिने सालेह के साथ नेक गुमान।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह :26, अल हुजुरात, तहतुल आयत:12)

इसी तरह सूए ज़न (बद गुमानी) की भी दो क़िस्में हैं :

(1) जाइज़ (2) मम्नूअ़

(1) जाइज़ : इस की चन्द सूरतें हैं।

पहली सूरत :

फ़ासिक़ मो'लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे अफ़्आल इस से ज़ुहूर में आते हों।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 26, अल हुजुरात, तहतुल आयत : 12)

अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 671 हिजरी) लिखते हैं : "अगर कोई शख़्स नेक हो तो उस के मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी जाइज़ नहीं और जो अ़लानिया गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब हो और फ़िस्क़ में मश्हूर हो तो उस के बारे में बद गुमानी करना जाइज़ है।"

(अल जामेउ़ल अह़कामिल क़ुरआन, पारह :26, अल हुजुरात तहतुल अल आयत: 12, जिल्द:8, स-फ़ह़ा:238 मुलख़्ख़सन)

अ़ल्लामा मह़मूद आलोसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی(अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 1270 हिजरी) इर्शाद फ़रमाते हैं : "सूए ज़न उस वक़्त ह़राम होगा जब मज़्नून (या'नी जिस के बारे में गुमान किया जाए) ऐसा शख़्स हो जिस के उ़यूब की पोशीदगी, ***सालिह़िय्यत*** (या'नी नेक होने) और अमानत व दियानत का मुशा–हदा किया जाए (या'नी वोह नेकी में मश्हूर हो) और अगर कोई शक में मुब्तला करने वाले बुरे कामों में अ़लानिया त़ौर पर मश्गू़ल हो जैसे शराब की दुकान में आना जाना या गाने वाली फ़ाजिरा औ़रतों की सोह़बत इख़्तियार करना या किसी बे रीश की त़रफ़ मुसल्सल देखते रहना,....तो इस सूरत में बद गुमानी ह़राम नहीं, चाहे गुमान करने वाले ने उन्हें शराब पीते या ज़िना करते या बेहूदा काम (या'नी बद फ़े'ली) करते हुए न देखा हो।" (रूहु़ल मआ़नी, पारह : 26, अल हु़जुरात तह़तुल आयत: 12, जिल्द:26, स–फ़ह़ा:428, मुलख़्ख़सन)

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 1137 हिजरी) इर्शाद फ़रमाते हैं : "गुमान की त़रफ़ उस वक़्त तक पेश रफ़्त न की जाए जब तक कि मज़्नून (या'नी जिस के बारे में दिल में गुमान आए) के बारे में ग़ौरो फ़िक्र न कर लिया जाए। चुनान्चे अगर मज़्नून नेक है तो इस पर मा'मूली वह्म की वजह से बद गुमानी न की

जाए बल्कि एह़तियात़ बरती जाए और तुम उस वक़्त तक किसी के साथ बद गुमानी न करो जब तक कि तुम्हारे लिये हुस्ने ज़न रखना मुम्किन हो। रहा फ़ुस्साक़ का मुआ़–मला तो उन के साथ ऐसी बद गुमानी रखना जाइज़ है जो उन के अफ़आ़ल से ज़ाहिर हो।" (रूहुल बयान, पारह : 26, अल हुजुरात तह़तुल आयत : 12, जिल्द:9, स–फ़ह़ा:85)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی (अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 1376 हिजरी) लिखते हैं : "बेशक मुसल्मान पर बद गुमानी ह़राम है मगर जब कि किसी क़रीना से उस का ऐसा होना साबित होता हो, तो अब ह़राम नहीं। म–सलन किसी को भट्टी (या'नी शराब ख़ाने) में आते जाते देख कर उसे शराब ख़ोर (या'नी शराब पीने वाला) गुमान किया तो इस (या'नी बद गुमानी करने वाले) का क़ुसूर नहीं, उस (या'नी शराब ख़ाने में आने जाने वाले) ने मौज़ए तोहमत (या'नी तोहमत लगने की जगह) से क्यूं इज्तिनाब (या'नी परहेज़) न किया।" (फ़तावा अम्जदिय्या, जिल्द:1, स–फ़ह़ा:123) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो अपने आप को ख़ुद तोहमत के लिये पेश कर दे तो वोह अपने बारे में बद गुमानी करने वाले को मलामत न करे।" (अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:7, अल हुजुरात तह़तुल आयत :12, स–फ़ह़ा:566)

लेकिन याद रहे कि अहले मा'सिय्यत और अ़लानिया गुनाह करने वालों से बद गुमानी जाइज़ होने का येह मत़लब नहीं है कि हम उन की बदगोई या ऐ़ब उछालना शरूअ़ कर दें बल्कि ऐसी सूरत में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये सिर्फ़ दिल में उन्हें बुरा समझा जाए।

(अल ह़दी-क़ुत्नदिय्या, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:11 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर मुसल्मान की इ़ज़्ज़त, माल और जान दूसरे (मुसल्मान) पर ह़राम है।"

(जामेइ़त्तिरमिज़ी, किताबु अल बिर्रि वस्सिला, अल ह़दीस:1934, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:372)

दूसरी सूरत :

जब नुक़्सान में मुब्तला होने का क़वी एह़तिमाल हो। म-सलन किसी इस्लामी भाई ने किसी के साथ कारोबारी शराकत की या ख़रीदो फ़रोख़्त की या उस से किराए पर कोई चीज़ ली या किसी भी त़रह़ का माली मुआ़-मला त़ै किया और सामने वाले की किसी मश्कूक ह़-र-कत की वजह से दिल में बे इख़्तियार बद गुमानी पैदा हुई और उस ने इस बद गुमानी की बुन्याद पर ऐसी एह़तियाती तदाबीर इख़्तियार कीं जिस से सामने वाले को कोई नुक़्सान न पहुंचे तो जाइज़ है क्यूंकि अगर ह़क़ी-क़तन सामने वाले की निय्यत दुरुस्त न हो और येह शख़्स हुस्ने ज़न ही

क़ाइम करता रह जाए तो नुक़्सान में मुब्तला होने का क़वी इम्कान है।

जैसा कि अ़ल्लामा सय्यिद महमूद आलोसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1270 हिजरी) तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में लिखते हैं : ''गुमान करने वाले के लिये बुरे गुमान के तक़ाज़े पर अ़मल करने में कोई ह़-रज नहीं (जब कि मज़्नून को कोई नुक़्सान न पहुंचे) म-सलन उस ने किसी शख़्स के बारे में गुमान किया कि वोह उसे नुक़्सान पहुंचाना चाहता है तो वोह इस से बचने के लिये ऐसे इक़्दामात कर सकता है जिन की वजह से उस (सामने वाले) शख़्स को नुक़्सान न पहुंचे। त़-बरानी शरीफ़ में है : ''लोगों से सूए ज़न के ज़रीए अपनी ह़िफ़ाज़त करो।''

(अल मो'जमुल अवसत़, अल ह़दीस:598, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:181) मज़ीद लिखते हैं : ''बुरे गुमानों में से बा'ज़ वोह हैं जिन की पैरवी मुबाह़ है जैसे मआ़शी मुआ़-मलात में बद गुमानी होना।'' (रूहुल मआ़नी, पारह:26, अल हुजुरात तह़तुल आयत : 12, जिल्द:26, स-फ़ह़ा:428,429)

अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1137 हिजरी) तफ़्सीरे रूहुल बयान में लिखते हैं : ''बा'ज़ गुमान मुबाह हैं जैसे उमूरे मआ़श या'नी दुन्यावी मुआ़-मलात और मआ़श के मुहिम्मात में बद गुमानी करना बल्कि इन उमूर में बद गुमानी मूजिबे सलामती है।''

(रूहुल बयान, पारह:26, अल हुजुरात तह़तुल आयत:12, जिल्द:9, स-फ़ह़ा:84)

(2) मम्नूअ़ : जैसे अल्लाह तआ़ला के साथ बुरा गुमान रखना और नेक मोमिन के साथ बुरा गुमान रखना।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 26, अल हुजुरात, तह़तुल आयत : 12 व फ़त्हुल बारी, किताबुल बिर्रि वस्सिला, जिल्द:15, स-फ़ह़ा: 219)

नोट : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बद गुमानी का मत़लब येह है कि येह गुमान रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे रिज़्क़ नहीं देगा या मेरी ह़िफ़ाज़त नहीं फ़रमाएगा या मेरी मदद नहीं करेगा वग़ैरहा।

(अल ह़दी-क़ुत्नदिय्या, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:7)

बद गुमानी से बचिये

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''बद गुमानी से बचो बेशक बद गुमानी बद तरीन झूट है।''(सह़ीहुल बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाबो मा यख़्तब अ़ला ख़ुत्बह अख़िय्या, अल ह़दीस: 5143, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:446)

और इर्शाद फ़रमाया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''मुसल्मान का ख़ून, माल और उस से बद गुमानी (दूसरे मुसल्मान पर) ह़राम है।''

(शुउ़बुल ईमान, बाबो फ़ी तह़रीम ए'राजुन्नास, अल ह़दीस:6706, जिल्द:5, स-फ़ह़ा:297)

जब कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से

मरफ़ूअ़न मरवी है : "जिस ने अपने मुसल्मान भाई से बुरा गुमान रखा, बेशक उस ने अपने रब से बुरा गुमान रखा।"

(अद्दुर्रुल मन्सूर, पारह: 26, अल हुजुरात, तह्तुल आयत:12, जिल्द: 7, स-फ़्हा:566)

बदगुमानी पर हुक्मे शर-ई कब लगेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

किसी शख़्स के दिल में किसी के बारे में बुरा गुमान आते ही उसे फ़े'ले ह़राम का मुर्तकिब क़रार नहीं दिया जाएगा क्यूंकि महूज़ दिल में बुरा ख़याल आ जाने की बिना पर क़ाबिले इ़ताब ठहराने का मत़लब किसी इन्सान पर उस की त़ाक़त से ज़ाइद बोझ डालना है और येह बात शर-ई तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है, अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا (پ٢ البقرة : ٦٨٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर।

(पारह : 2,अल ब-क़रह: 286)

***बद गुमानी* के ह़राम होने की 2 सूरतें हैं :**

(1) जब इन्सान इस बद गुमानी को ***दिल पर जमा ले*** (या'नी इस का यक़ीन कर ले)

(2) ***इस को ज़बान पर ले आए या इस के तक़ाज़े पर अ़मल कर ले ।***

(1) बद गुमानी को दिल पर जमा लेना :

अ़ल्लामा मह़मूद आलोसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1270 हिजरी) लिखते हैं : "कहा गया है कि जिस चीज़ की मुमा-न-अ़त है "वोह इसी (या'नी बुरे) गुमान को दिल पर जमा लेना है और उस बद गुमानी के सबब की किसी अच्छी सूरत के साथ तावील कर के उसे ज़ाइल करने से बाज़ रहना है ।"

(रूहुल मआ़नी, पारह : 26, अल ह़ुजुरात, तह़तुल आयत : 12, जिल्द:26, स-फ़ह़ा:429)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐ़नी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) फ़रमाते हैं : गुमान वोह ह़राम है जिस पर गुमान करने वाला मुसिर हो और उसे अपने दिल पर जमा ले न कि वोह गुमान जो दिल में आए और क़रार न पकड़े ।

(उ़म्दतुल क़ारी, अल ह़दीस:96, जिल्द:14, स-फ़ह़ा:96)

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) फ़रमाते हैं : (मुसल्मान से) बद गुमानी भी इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ ज़बान से बुराई करना ह़राम है । लेकिन बद गुमानी से मुराद येह है कि दिल में किसी के बारे में बुरा

यक़ीन कर लिया जाए। रहे दिल में पैदा होने वाले ख़दशात व वस्वसे तो वोह मुआ़फ़ हैं बल्कि शक भी मुआ़फ़ है।'' मज़ीद लिखते हैं : ''बद गुमानी के पुख़्ता होने की पहचान येह है कि मज़्नून के बारे में तुम्हारी क़ल्बी कैफ़िय्यत तब्दील हो जाए, तुम्हें उस से नफ़रत महसूस होने लगे, तुम उस को बोझ समझो, उस की इ़ज़्ज़त व इक्राम और उस के लिये फ़िक्रमन्द होने के बारे में सुस्ती करने लगो । नबिय्ये अक्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **जब तुम कोई बद गुमानी करो तो उस पर जमे न रहो।''**

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस: 3227, जिल्द:3,स-फ़ह़ा:228)

या'नी उसे अपने दिल में जगह न दे, न किसी अ़मल के ज़रीए़ इस का इज़हार करे और न आ'ज़ा के ज़रीए़ इस बद गुमानी को पुख़्ता करे।

(एह़याउल उ़लूमिद्दीन, किताब आफ़ातुल्लिसान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:186)

म-सलन शैत़ान ने किसी इस्लामी भाई के दिल में किसी नेक शख़्स के बारे में रियाकारी का गुमान डाला तो उस इस्लामी भाई ने उस गुमान को फ़ौरन झटक दिया और उस मुसल्मान के बारे में मुख़्लिस होने का हुस्ने ज़न क़ाइम कर लिया तो अब उस की गरिफ़्त नहीं होगी और न ही येह ह़राम का मुर्तकिब केहलाएगा। इस के बर अ़क्स अगर दिल में बद गुमानी आने के बा'द उस को न झुटलाया और वोह बद गुमानी उस के

दिल में क़रार पकड़े रही ह़त्ता कि यक़ीन के द-रजे पर पहुंच गई कि फ़ुलां शख़्स रियाकार ही है तो अब बद गुमानी करने वाला गुनाहगार होगा चाहे उस बारे में ज़बान से कुछ न बोले।

(2) बद गुमानी को ज़बान पर ले आना या उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लेना : अल्लामा अब्दुल गनी नाबल्स عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अलमु-तवफ्फा 1143 हि.) लिखते हैं : शक या वह्म की बिना पर मुअमिनीन से बद गुमानी उस सूरत में ह़राम है जब इस का असर आ'ज़ा पर ज़ाहिर या'नी उस के तकाज़े पर अ़मल कर लिया जाए म-सलन उस बद गुमानी को ज़बान से बयान कर दिया जाए।

(अल ह़दी-क़तुन्नदिय्या, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:13, मुलख़्ख़सन)

और **अ़ल्लामा** मह़मूद आलोसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1270 हिजरी) लिखते हैं : जब बद गुमानी ग़ैर इख़्तियारी हो तो जिस चीज़ की मुमा-न-अ़त है, वोह उस के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है या'नी मज़्नून (यानी जिस के बारे में दिल में गुमान आए) को ह़क़ीर जानना या **उस की ऐ़ब गोई** करना या उस **बद गुमानी को बयान** कर देना। (रूहुल मआ़नी, पारह:26,अल हुजुरात तह़तुल आयत:12,जिल्द:26, स-फ़ह़ा:429,मुलख़्ख़सन)

म-सलन आप की दा'वत में न पहुंचने वाले इस्लामी भाई ने

मुलाक़ात होने पर अपना कोई उ़ज़्र पेश किया मगर आप के दिल में शैत़ान ने वस्वसा डाला कि येह झूट बोल रहा है और आप ने इस गुमान की पैरवी करते हुए फ़ौरन बोल दिया कि तुम झूट बोल रहे हो तो ऐसी बद गुमानी ह़राम है।

हलाकत ही हलाकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बद गुमानी में मुब्तला होने वाला वादिये हलाकत में जा पड़ता है क्यूंकि इस एक गुनाह की ब दौलत दीगर कई गुनाह सरज़द हो जाते हैं म-सलन

(1) अगर सामने वाले पर इस का इज़हार किया तो उस की दिल आज़ारी का क़वी अन्देशा है और बिग़ैर इजाज़ते शर-ई मुसल्मान की दिल आज़ारी ह़राम है। हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसल्मान को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी, पस उस ने अल्लाह तआ़ला को अज़िय्यत दी।"

(अल मो'जमुल अवसत़, अल ह़दीस:2607, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:386)

(2) अगर उस की ग़ैर मौजूदगी में किसी दूसरे पर इज़हार किया तो ग़ीबत हो जाएगी और मुसल्मान की ग़ीबत करना ह़राम है। क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ط اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ط

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और एक दूसरे की ग़ीबत न करो । क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा ।

(पारह: 26, अल हुजुरात:12)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) इर्शाद फ़रमाते हैं : "मुसल्मानों से बद गुमानी रखना शैत़ान के मक्रो फ़रेब की वजह से होता है, बेशक बा'ज़ गुमान गुनाह होते हैं और जब कोई शख़्स किसी के बारे में बद गुमानी को दिल पर जमा लेता है तो शैत़ान उस को उभारता है कि वोह ज़बान से इस का इज़हार करे इस त़रह़ वोह शख़्स ग़ीबत का मुर्तकिब हो कर हलाकत का सामान कर लेता है या फिर वोह उस के हुक़ूक़ पूरे करने में कोताही करता है या फिर उसे ह़क़ीर और ख़ुद को उस से बेहतर समझता है और येह तमाम चीज़ें हलाक करने वाली हैं ।"

(अल ह़दी-क़ुन्नदिय्या, जिल्द: 2, स-फ़ह़ा: 8)

(3) बद गुमानी के नतीजे में तजस्सुस पैदा होता है क्यूं कि दिल महूज़ गुमान पर सब्र नहीं करता बल्कि तह़क़ीक़ त़लब करता है

जिस की वजह से इन्सान तजस्सुस में जा पड़ता है और येह भी मम्नूअ़ है। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया :

وَلَا تَجَسَّسُوْا *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* और ऐब न ढूंढो।

(पारह : 26, अल हुजुरात:12)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1367 हिजरी) इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : ''या'नी मुसल्मानों की ऐब जूई न करो और उन के छुपे ह़ाल की जुस्तुजू में न रहो जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया।''

(4) सूए ज़न से बुग़्ज़ और ह़सद जैसे बात़िनी अम्राज़ भी पैदा होते हैं।

(फ़त्ह़ुल बारी, अल ह़दीस: 6066, जिल्द:10, स-फ़ह़ा: 410)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

वालिदैन व औलाद, भाई व बहन, ज़ौज व ज़ौजा, सास व बहू, सुसर व दामाद, नन्द व भावज बल्कि तमाम अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताद व शागिर्द, सेठ और नौकर, ताजिर व गाहक, अफ़्सर व मज़्दूर, ह़ाकिम व मह़कूम अल ग़-रज़ ऐसा लगता है कि तमाम दीनी व दुन्यवी शो'बों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले मुसल्मानों की अक्सरिय्यत इस

वक़्त बद गुमानी की ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है। किसी को मोबाइल पर फ़ौन करें और वोह Receive न करे तो बद गुमानी.....शौहर की तवज्जोह बीवी की त़रफ़ कम हो गई तो फ़ौरन सास से बद गुमानी.....बेटे की तवज्जोह कम हो गई तो फ़ौरन बहू से बद गुमानी.....किसी फ़ेक्टरी से अच्छी नौकरी से फ़ारिग़ हो गए तो दफ़्तर के किसी फ़र्द से बद गुमानी..... कारोबार में नुक़्सान हो गया तो क़रीबी कारोबारी ह़रीफ़ से बद गुमानी.... तन्ज़ीमी त़ौर पर ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ बात हो गई तो ज़िम्मादारान से बद गुमानी....इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त के इन्तिज़ामात में कमज़ोरी हुई तो फ़ौरन मुन्तज़िमीन से बद गुमानी....इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में कोई शख़्स झूम रहा है या रो रहा है तो बद गुमानी..... किसी बुज़ुर्ग या पीर ने अपने मुरीदीन या मु-तअ़ल्लिक़ीन की तरग़ीब के लिये कोई अपना वाक़ेआ़ बयान कर दिया तो फ़ौरन उस से बद गुमानी..... जिस ने क़र्ज लिया और वोह राबित़े में नहीं आ रहा या जिस से माल बुक करवा लिया वोह मिल नहीं रहा तो फ़ौरन बद गुमानी....किसी ने वक़्त दिया और आने में ताख़ीर हो गई तो बद गुमानी.....फ़ुलां के पास थोड़े ही अ़रसे में गाड़ी, अच्छा मकान और दीगर सहूलिय्यात आ गईं फ़ौरन बद गुमानी, उसे शोहरत मिल गई तो बद गुमानी।

आप ग़ौर करते जाएं तो शबो रोज़ न जाने कितनी मरतबा हम बद गुमानी का शिकार होते होंगे । फिर येह इब्तिदाअन पैदा होने वाली बद गुमानी उस शख़्स के ऐबों की टोह में लगाती, ह़सद पर उभारती, ग़ीबत और बोहतान पर उक्साती और आख़िरत बरबाद करती है । इसी बद गुमानी की वजह से भाई भाई में दुश्मनी हो जाती है, सास बहू में ठन जाती है, मियां बीवी में जुदाई, भाई बहनों के दरमियान क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ी हो जाती है और यूं हंसते बसते घर उजड़ जाते हैं, और अगर येही बद गुमानी किसी मज़हबी तह़रीक से वाबस्ता अफ़्राद में आ जाए तो निगरान व मा तह़्त के दरमियान ए'तेमाद की फ़ज़ा ख़त्म हो जाती है जिस की वजह से ना क़ाबिले बयान नुक़्सान उठाना पड़ता है । और अगर येह बद गुमानी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه बिल्ख़ुसूस अपने पीरो मुर्शिद से हो तो ऐसा शख़्स फ़ुयूज़ो ब-रकात से मह़रूम रह जाता है । इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुरीद पर पीर के हुक़ूक़ का बयान करते हुए कुछ यूं लिखते हैं : ''(अपने पीर से मु-तअ़ल्लिक़) दिल में बद गुमानी को जगह न दे बल्कि यक़ीन जाने कि मेरी समझ की ग़-लती है ।''

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:24, स-फ़ह़ा:369)

सौदागर की तौबा :

अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 768 हिजरी) लिखते हैं : एक साहिबे इ़ल्म व फ़ज़्ल बयान करते हैं कि बग़्दाद में एक सौदागर था जो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की शान में बद कलामी किया करता था। कुछ अ़रसे बा'द मैं ने उसी शख़्स को औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की सोह़बत में देखा और किसी ने मुझे बताया कि इस ने अपनी सारी दौलत उन्हीं पर लुटा दी है। मैं ने उस सौदागर से इस तब्दीली की वजह दरयाफ़्त की तो उस ने बताया : "मैं ग़-लत़ी पर था और इस का एह़सास मुझे इस त़रह़ हुवा कि एक मरतबा जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को देखा कि बहुत जल्दी में मस्जिद से निकल रहे हैं। मैं ने सोचा कि देखो तो सही येह शख़्स बड़ा सूफ़ी केहलाता है और थोड़ी देर के लिये मस्जिद में रुकने को तैयार नहीं। मैं ने सब कुछ छोड़ा और अपने दिल में कहा : देखूं तो सही कि येह कहां जाते हैं ? और उन के पीछे पीछे चल दिया। उन्हों ने बाज़ार जा कर नानबाई से नर्म नर्म रोटियां ख़रीदीं, मैं ने सोचा सूफ़ी साहिब को देखिये नर्म नर्म रोटियां ले रहे हैं, इस के बा'द आप ने कबाब वाले से एक दिरहम के कबाब ख़रीदे येह देख कर मेरा ग़ुस्सा और फ़ज़ूं हुवा। वहां से

वोह ह़ल्वाई की दुकान पर पहुंचे और एक दिरहम का फालूदा लिया। मैं ने दिल में ठान ली कि इन्हें ख़रीदने दो, जब येह इसे खाने बैठेंगे तो मैं इन का मज़ा किरकिरा करूंगा। सब चीज़ें ख़रीदने के बा'द उन्हों ने जंगल की राह ली। मैं ने सोचा इन्हें बैठ कर खाने के लिये शायद सब्ज़ा ज़ार और पानी की तलाश है चुनान्चे मैं उन के पीछे लगा रहा ह़त्ता कि अ़स्र के वक़्त आप एक गाउं की मस्जिद में पहुंचे, जहां एक बीमार आदमी मौजूद था। आप उस के सिरहाने बैठ कर उसे खाना खिलाने लगे। मैं थोड़ी देर के लिये वहां से चला गया और गाउं की सैर को निकल गया। जब मैं वापस लौटा तो ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی वहां नहीं थे। मैं ने उस बीमार से आप عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के बारे में पूछा तो उस ने बताया कि वोह बग़दाद चले गए। मैं ने पूछा : "बग़दाद यहां से कितनी दूर है ?" उस ने बताया : "तक़रीबन 120 मील।" मेरी ज़बान से निकला : "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن" मुझे अपने किये पर बहुत पछतावा हुवा। मेरे पल्ले इतने पैसे न थे कि सुवारी पर जाऊं और न जिस्म में इतनी सकत कि पैदल जा पहोंचुं। उस बीमार ने मश्वरा दिया कि ह़ज़रत बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के आने तक यहीं रहो।" चुनान्चे मैं दूसरे जुमुआ़ तक वहीं रुका रहा।

अगले जुमुअ़तुल मुबारक ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی

खाना ले कर फिर से बीमार के पास पहुंचे। जब आप उसे खाना खिला चुके तो उस ने कहा : "ऐ अबू नस्र! येह शख़्स गुज़श्ता जुमुआ़ आप के पीछे यहां आया था और हफ़्ते भर से यहीं पड़ा हुवा है इसे वापस पहुंचा दीजिये। ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِیْ ने जलाल से मेरी त़रफ़ देखा और पूछा : "मेरे साथ क्यूं आए थे ?" मैं ने कहा : "मुझ से ग़-लत़ी हो गई।" फ़रमाया : "मेरे पीछे पीछे चले आओ।" मैं उन के पीछे चलता रहा ह़त्ता कि मग़रिब के वक़्त हम शहर के क़रीब जा पहुंचे। उन्हों ने मेरे मह़ल्ले के बारे में पूछा और मेरे बताने के बा'द फ़रमाने लगे : "जाओ और दोबारा ऐसा न करना।" मैं ने उसी वक़्त से औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के बारे में बद गोई से तौबा कर ली और इन की सोह़बत इख़्तियार कर ली और अब इसी पर क़ाइम रहूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (रौज़ुर्रियाह़ीन,अल ह़िकायतुस्साबि अ़तुस्सलासून बा'दल मिअतैन, स-फ़ह़ा: 218, मुलख़्ख़सन)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने कि औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی से बुग़्ज़ व अ़दावत रखने और उन के बारे में बद गुमानी कर के टोह में पड़ने वाले को कितनी शर्मिन्दगी उठाना पड़ी। अल्लाह तआ़ला हमें अपने औलिया से हुस्ने अ़क़ीदत क़ाइम रखने की तौफ़ीक़ दे।

बद गुमानी करने वाली कनीज़ :

अ़ल्लामा अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़न क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 465 हिजरी) रक़म तराज़ हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन नूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की ख़ादिमा ज़ैतूना का बयान है : एक मरतबा सख़्त सर्दी थी, मैं ने ह़ज़रत से पूछा : ''आप के लिये कुछ लाऊं ?'' तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दूध और रोटी लाने का हुक्म फ़रमाया। मैं मत़्लूबा चीज़ें ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई तो देखा कि आप के सामने कुछ कोइले पड़े थे जिन्हें आप हाथ से उलट पलट रहे थे। आपने रोटी ली और खाना शुरूअ़ कर दी। अब मन्ज़र येह था कि आप रोटी खा रहे थे और दूध आप के हाथ पर बेह रहा था जिस पर कोइले की कालक लगी हुई थी। येह देख कर मैं ने दिल में कहा : ''इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तेरे येह वली किस क़-दर गन्दे होते हैं इन में से कोई भी सफ़ाई का ख़याल रखने वाला नहीं होता।''

इस के बा'द मैं किसी काम से घर से बाहर निकली तो अचानक एक औ़रत आ कर मुझ से चिमट गई और मुझ पर अपने कपड़ों की गठड़ी की चोरी का इल्ज़ाम लगाने लगी। मेरे फ़रयाद करने के बा वुजूद लोग मुझे पकड़ कर कोतवाल के पास ले गए। ह़ज़रत को इत्तिला हुई तो आप तश्रीफ़ लाए और मेरे ह़क़ में सिफ़ारिश फ़रमाई। मगर कोतवाल ने बसद

अदब अ़र्ज़ की : ''ह़ज़रत मैं इसे कैसे छोड़ सकता हूं जब कि येह औ़रत इस पर चोरी का इल्ज़ाम लगा रही है।'' इतने में एक लड़की वहां आई जिस के पास वही गठड़ी थी और मेरी जान बख़्शी हो गई। ह़ज़रत मुझे ले कर घर वापस आए और फ़रमाया ''क्या अब दोबारा कहोगी कि अल्लाह के वली किस क़-दर गन्दे होते हैं।'' येह सुन कर मैं ह़ैरान रह गई और फ़ौरन तौबा कर ली।

(अर्रिसालतुल क़ुशैरिय्या, बाब ह़दीसुल ग़ार, स-फ़ह़ा: 406)

वली की त़ाक़त :

इ़मामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1340 हिजरी) का बयाने ह़िकायत है : ह़ज़रते ख़्वाजा नक़्शबन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बुख़ारा में ह़ज़रत अमीर कलाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शोहरा सुन कर ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। आप ने देखा कि मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मज्मआ़ है और अखाड़े में कुश्ती हो रही है। ह़ज़रत भी मौजूद हैं और कुश्ती में शरीक हैं, ह़ज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्द आ़लिमे जलील, पाबन्दे शरीअ़त (थे), उन के क़ल्ब ने कुछ पसन्द नहीं किया ह़ालांकि इस में शरअ़न (आजकल की कुश्तियों की मिस्ल) कोई ना जाइज़ बात भी शामिल न थी, येह ख़याल आना ही था कि गुनूदगी आ गई, देखा कि ह़श्र का मैदान

है, उन के ओर जन्नत के दरमियान दलदल का एक दरया ह़ाइल है। येह गुज़र कर उस के पार जाना चाहते थे। चुनान्चे उस में उतरे और जितना ज़ोर लगाते उतना धंसते चले जाते, यहां तक कि बग़लों तक धंस गए।

अब निहायत परेशान हुए कि क्या करें, इतने में देखा कि ह़ज़रते अमीर कलाल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तशरीफ़ लाए और एक हाथ से बाहर निकाल कर दरया के पार पहुंचा दिया। फिर आप की आंख खुल गई और इस से पहले कि आप कुछ केहते, ह़ज़रते अमीर कलाल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया कि अगर हम कुश्ती न लड़े तो येह त़ाक़त कहां से आए (या'नी हमारा लड़ना अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और जिहाद की तय्यारी के लिये है) येह सुन कर आप फ़ौरन उन के क़दमों में गिर गए और उन के हाथ पर बैअ़त कर ली।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा:4, स-फ़ह़ा:364)

खुश रंग सेब :

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1340 हिजरी) का बयान है : एक साह़िब औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی में से थे। आप की ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिये ह़ाज़िर हुवा। हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे। हुज़ूर ने एक

सेब बादशाह को दिया और कहा खाओ। उस ने अ़र्ज़ की हुज़ूर भी नोश फ़रमाएं। चुनान्चे आप ने भी खाए और बादशाह ने भी। उस वक़्त बादशाह को दिल में ख़याल गुज़रा कि येह जो सब से बड़ा ख़ुशरंग सेब है अगर अपने हाथ से उठा कर मुझे दे दें तो मैं जान लूंगा कि येह वली हैं। आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने वोही सेब उठा कर फ़रमाया कि हम मिस्र गए थे वहां एक जगह जल्सा बड़ा भारी था, देखा कि एक शख़्स है उस के पास एक गधा है और उस की आंखों पर पट्टी बंधी है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता है, गधा सारी मजलिस का दौरा करता है, जिस के पास होती है, जा कर सर टेक देता है।

येह हिकायत हम ने इस लिये बयान की कि अगर येह सेब न दें तो हम वली ही नहीं, और अगर दे देंगे तो उस गधे से बढ़ कर क्या कमाल दिखाया। येह फ़रमा कर सेब बादशाह की त़रफ़ फेंक दिया।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा:4, स-फ़ह़ा: 342)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہ की बारगाह में ज़बान से साथ साथ दिल भी संभाल कर जाना चाहिये।

शाही दरबार में सिफ़ारिश :

शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 606 हिजरी) लिखते हैं : दो दरवेश त़वील सफ़र के बा'द ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह ख़फ़ीफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اللَّطِيف से मिलने पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि आप शाही दरबार में जल्वा फ़रमा हैं। येह सुन कर उन लोगों ने सोचा कि येह किस क़िस्म के बुज़ुर्ग हैं जो शाही दरबार में ह़ाज़िरी देते हैं। बहर ह़ाल येह दोनों बाज़ार की त़रफ़ निकल गए और अपनी जेब सिलवाने के लिये एक दर्ज़ी की दुकान पर पहुंचे। इसी दौरान दर्ज़ी की क़ैंची गुम हो गई और उस ने इन दोनों को चोरी के शुबे में गरिफ़्तार करवा दिया। जब पोलीस दोनों को ले कर शाही दरबार में पहुंची तो ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह ख़फ़ीफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اللَّطِيف ने बादशाह से उन की सिफ़ारिश करते हुए फ़रमाया : "येह दोनों चोर नहीं हैं, लिहाज़ा इन को छोड़ दिया जाए।" चुनान्चे आप की सिफ़ारिश पर उन दोनों को रिहा कर दिया गया। इस के बा'द आप ने उन दोनों से फ़रमाया : "मैं इसी वजह से दरबारे शाही में मौजूद रहता हूं।" येह सुन कर वोह दोनों मा'ज़ेरत करने लगे और आप के अ़क़ीदत मन्दों में शामिल हो गए।

(तज़्किरतुल औलिया, ज़िक्रे अबू अ़ब्दुल्लाह ख़फ़ीफ़, स-फ़ह़ा:109)

बद गुमानी के चन्द इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बद गुमानी की हलाकत ख़ैज़ियों से बचने के लिये हमें चाहिये कि इस मर-ज़े बातिन के इलाज के लिये अ-मली कोशिशों का आग़ाज़ कर दें। इस सिल्सिले में इन उमूर पर तवज्जोह देना बहुत मुफ़ीद साबित होगा।

पहला इलाज :

हमें चाहिये कि अपने मुसल्मान भाइयों की ख़ूबियों पर नज़र रखें। जो अपने मुसल्मान भाइयों के बारे में हुस्ने ज़न रखता है उसे सुकूने क़ल्ब नसीब होता और जो बद गुमानी की आदते क़बीह में मुब्तला हो उस का दिल वहूशतों की आमाज गाह बना रहता है।

दूसरा इलाज :

अपनी इस्लाह की कोशिश जारी रखिये क्यूंकि जो ख़ुद नेक होता है वोह दूसरों के बारे में भी अच्छे गुमान रखता है। जो ख़ुद बुरे कामों में मश्ग़ूल रहता है उसे दूसरे भी अपने जैसे दिखाई देते हैं। अ-रबी मक़ूला है اِذَاسَاءَ فِعْلُ الْمَرْءِ سَاءَتْ ظُنُوْنُهٗ या'नी जब किसी के काम बुरे हो जाएं तो उस के गुमान भी बुरे हो जाते हैं।

(फ़ैज़ुल क़दीर, जिल्द: 3, स-फ़हा:157)

तीसरा इलाज :

बुरी सोह़बत से बचते हुए नेक सोह़बत इख़्तियार कीजिये, जहां दूसरी ब-र-कतें मिलेंगी, वहीं बद गुमानी से बचने में भी मदद मिलेगी। रूहुलमआ़नी में है: ''صُحْبَةُ الْاَشْرَارِ تُوْرِثُ سُوْءَ الظَّنِّ بِالْاَخْيَارِ'' या'नी बुरों की सोह़बत अच्छों से बद गुमानी पैदा करती है।

(रूहुल मआ़नी, पारह:16, मरयम:तह़तुल आयत :98, जिल्द:16,स-फ़ह़ा: 612)

चौथा इलाज :

जब भी दिल में किसी मुसल्मान के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपनी तवज्जोह उस की त़रफ़ मब्ज़ूल करने के बजाए बद गुमानी के शर-ई अह़काम को पेशे नज़र रखिये और बद गुमानी के अन्जाम पर निगाह रखते हुए ख़ुद को अ़ज़ाबे इलाही से डराइये। प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन हम जहन्नम का हल्के से हल्का अ़ज़ाब भी बरदाश्त करने की सकत नहीं रखते। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अक्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दोज़ख़ियों में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खौलने लगेगा।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, बाब सि-फ़तुल जन्नति वन्नार, अल ह़दीस: 6561, जिल्द:4, स-फ़ह़ा: 262)

पांचवा इलाज :

अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दस्ते दुआ़ दराज़ कर दीजिये और यूं अ़र्ज़ कीजिये : "ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह कमज़ोर व ना तुवां बन्दा दुन्या व आख़िरत में काम्याबी के लिये इस बद गुमानी से अपने दिल को बचाना चाहता है। ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी मदद फ़रमा और मेरी इस कोशिश को काम्याबी की मन्ज़िल तक पहुंचा दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़ता फ़रमा।"

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

छटा इलाज :

जब भी किसी मुसल्मान के बारे में दिल में बुरा गुमान आए तो उस पर तवज्जोह न दें बल्कि उसे झटकने की कोशिश करें और उस के अ़मल पर अच्छा गुमान क़ाइम करने की कोशिश करें। म–सलन कोई इस्लामी भाई ना'त या बयान सुनते हुए अश्क बहा रहा हो और उसे देख कर आप के दिल में उस के मु–तअ़ल्लिक़ रियाकारी की बद गुमानी पैदा हो तो फ़ौरन उस के इख़्लास से रोने के बारे में हुस्ने ज़न क़ाइम कर लें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है :

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝

तर्जमए कन्जुल ईमान : क्यूं न हुवा जब तुम ने उसे सुना था कि मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों ने अपनो पर नेक गुमान किया होता और केहते येह खुला बोहतान है।

(पारह : 18, अन्नूर:12)

अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 310 हिजरी) इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : या'नी मोमिनीन एक दूसरे के बारे में हुस्ने ज़न क़ाइम करें और उसे बयान भी करें अगर्चे येह गुमान यक़ीन के द-रजे तक न पहुंचा हो।

(जामेउ़ल बयान फ़ी तावीलिल कुरआन, पारह :26, अल हुजुरात: तह़तुल आयत: 12, जिल्द:11,स-फ़ह़ा: 394, मुलख़्ख़सन)

इस आयत के तह़त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : "मुसल्मान को येही हुक्म है कि मुसल्मान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी मम्नूअ़ है।"

अच्छा गुमान इबादत है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अच्छा गुमान अच्छी इबादत से है।**" (सु-ननेे अबी दावूद, किताबुल अदब, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:387, अल ह़दीस:4993)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह्मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 1391 हिजरी) इस ह़दीस के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुए लिखते हैं : "या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, उन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादत में से एक इबादत है।"

(मिर्आतुल मनाजीह़, जिल्द:6, स–फ़ह़ा:621)

बद गुमानी पर न जमे रहो :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عنه से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी उम्मत में तीन चीज़ें लाज़िमन रहेंगी : बद फ़ाली, ह़सद और बद गुमानी।" एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عنه ने अ़र्ज़ की :"या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिस शख़्स में येह तीन ख़स्लतें हों वोह इन का किस त़रह़ तदारुक करे?" इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम ह़सद करो तो अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करो और **जब तुम कोई बद गुमानी करो तो उस पर जमे न रहो** और जब तुम बद फ़ाली निकालो तो उस काम को कर लो।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस: 3227, जिल्द: 3, स–फ़ह़ा: 228)

अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى (अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 1031 हिजरी) फ़ैज़ुल क़दीर में लिखते हैं : इस

ह़दीस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि येह तीनों ख़स्लतें अम्राज़े क़ल्ब में से हैं जिन का इ़लाज ज़रूरी है जो कि ह़दीस में बयान कर दिया गया है। बद गुमानी से बचने का त़रीक़ा येह है कि दिल या आ'ज़ा से इस की तस्दीक़ न करे। तस्दीक़े क़ल्बी से मुराद येह है कि इस गुमान को दिल पर जमा ले और उसे ना पसन्द न जाने और इस (या'नी तस्दीक़े क़ल्बी) की अ़लामत येह है कि बद गुमानी करने वाला इस बुरे गुमान को ज़बान से बयान कर दे।

(फ़ैज़ुल क़दीर, अल ह़दीस: 3465, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:401)

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) फ़रमाते हैं : "बद गुमानी के ह़राम होने की वजह येह है कि दिल के भेदों को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला जानता है। लिहाज़ा तुम्हारे लिये किसी के बारे में बुरा गुमान रखना उस वक़्त तक जाइज़ नहीं है जब तक तुम उस की बुराई इस त़रह़ ज़ाहिर न देखो कि उस में तावील की गुन्जाइश न रहे। पस उस वक़्त तुम्हें ला मुह़ाला उसी चीज़ का यक़ीन रखना पड़ेगा जिसे तुम ने जाना और देखा है। और अगर तुम ने उस की बुराई को न अपनी आंखों से देखा और न ही कानों से सुना मगर फिर भी तुम्हारे दिल में उस के बारे में बुरा गुमान पैदा हो तो समझ जाओ कि येह बात तुम्हारे दिल में शैत़ान ने डाली है। उस वक़्त तुम्हें

चाहिये कि दिल में आने वाले ***इस गुमान को झुटला दो*** क्यूंकि येह सब से बड़ा फ़िस्क़ है।'' मज़ीद लिखते हैं : ''यहां तक कि अगर किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आ रही हो तो उस को शर-ई ह़द लगाना जाइज़ नहीं क्यूंकि हो सकता है कि उस ने शराब का घूंट भरते ही कुल्ली कर दी हो या किसी ने उसे ज़बर दस्ती शराब पिला दी हो, जब येह सब एह़तिमाल मौजूद हैं तो (सुबूते शर-ई के बिग़ैर) मह़ज़ क़ल्बी ख़यालात कि बिना पर तस्दीक़ कर देना और उस मुसल्मान के बारे में बद गुमानी करना जाइज़ नहीं है।''

(एह़याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल आफ़ातिल्लिसान,जिल्द:3,स-फ़ह़ा:186)

अच्छी सूरत पर मह़मूल करो :

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ फ़रमाते हैं:''अस्ह़ाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ وَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से मेरे बा'ज़ भाइयों ने मुझे लिख कर भेजा कि ***अपने मुसल्मान भाई के फ़े'ल को अच्छी सूरत पर मह़मूल करो*** जब तक उस के ख़िलाफ़ कोई दलील ग़ालिब न हो जाए और किसी मुसल्मान भाई की ज़बान से निकलने वाले कलिमे को उस वक़्त तक ***बुरा गुमान न करो*** जब तक कि तुम उसे किसी अच्छी सूरत पर मह़मूल कर सकते हो और जो ख़ुद अपने आप को

तोहमत के लिये पेश करे उसे अपने सिवा किसी को मलामत नहीं करनी चाहिये ।''

(शुउ़बुल ईमान, बाब फ़ी हुस्निल ख़ल्क़, फ़स्ल फ़ी तर्किल ग़ज़ब, अल ह़दीस: 8345, जिल्द: 6,स-फ़ह़ा:323)

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ का फ़रमाने नसीह़त निशान है : ''अपने भाई की ज़बान से निकलने वाले कलिमात के बारे में बद गुमानी मत करो जब तक कि तुम उसे भलाई पर मह़मूल कर सकते हो ।''

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:7, अल हुजुरात तह़तुल आयत:12,स-फ़ह़ा:565)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1340 हिजरी) फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में लिखते हैं : ***''मुसल्मान का ह़ाल ह़त्तल इम्कान सलाह़*** (या'नी अच्छाई) ***पर ह़म्ल करना*** (या'नी गुमान करना) ***वाजिब है ।''***

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:19, स-फ़ह़ा: 691)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِیۡ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1367 हिजरी) तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : ''मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान मम्नूअ़ है इस त़रह़ (कि) उस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद

मा'ना मुराद लेना बा वुजूद येह कि उस के दूसरे सह़ीह़ मा'ना मौजूद हों और मुसल्मान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो येह भी गुमाने बद में दाख़िल है।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह:26, अल हुजुरात:12)

मुसल्मान से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब है :

अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबल्सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1143 हिजरी) लिखते हैं : जब किसी मुसल्मान का ह़ाल पोशीदा हो (या'नी उस के नेक होने का भी एह़तिमाल हो और बद होने का भी) तो उस से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब और उस के बारे में बद गुमानी ह़राम है।

(अल ह़दी-क़ुत्नदिय्या, जिल्द: 2, स-फ़ह़ा:16,17, मुलख़्ख़सन)

इबादत गुज़ार फ़क़ीर :

अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْوَالِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 768 हिजरी) लिखते हैं : इमामुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम जुनैद बग़्दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْھَادِی एक मरतबा मस्जिदे शोनेज़िया में बैठे किसी जनाज़े का इन्तिज़ार कर रहे थे, और भी बहुत से बाशिन्दगाने बग़्दाद वहां मौजूद थे। आप ने वहां एक फ़क़ीर को देखा जिस के चेहरे से इबादत व रियाज़त के आसार नुमायां थे। वोह लोगों से सुवाल कर रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़्दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْھَادِی ने सोचा कि इस के

बजाए अगर येह कोई ऐसा काम करता जिस के सबब येह लोगों से सुवाल करने की आफ़त से बच जाता तो बेहतर था। उसी शब की बात है कि सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى पर आप के मा'मूलाते शब (या'नी नवाफ़िल और वज़ाइफ़ वग़ैरा) दुश्वार हो गए और किसी काम में जी भी नहीं लग रहा था। आप बहुत देर तक यूंही जागते रहे बिल आख़िर आप पर नींद का ग़-लबा हुवा और आप की आंख लग गई। आप फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि उसी फ़क़ीर को लाया गया है और एक दस्तरख़्वान पर डाल दिया गया और मुझ से कहा जा रहा है कि इस का गोश्त खा, तू ने इस की ग़ीबत की है, मुझ पर ह़क़ीक़ते ह़ाल वाज़ेह़ हो गई। मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं ने इस की ग़ीबत नहीं की, हां ! इस से मु-तअ़ल्लिक़ दिल में कुछ ऐसा सोचा था।" जवाब मिला : "तुम उन लोगों में से नहीं, जिन से हम इस क़-दर भी गवारा करें जाओ उस बन्दे से मुआ़फ़ी मांगो।" आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : सुब्ह़ मैं उस की तलाश में निकला, वोह दरया के कनारे मुझे मिल गया और सब्ज़ियां धोने वाले जो पत्ते वहां छोड़ जाते हैं, वोह चुन रहा था। मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने जवाब देने के बा'द कहा : "ऐ अबुल क़ासिम ! फिर ऐसा करोगे ?" मैं ने कहा : "नहीं।"

उस ने कहा : ''जाओ, अल्लाह तआ़ला तुम्हें और हमें मुआ़फ़ फ़रमाए ।''

(रौज़ुर्रियाहीन, अल हि़कायतुस्सामिनह वल अ़शरून, बा'द माइह, स-फ़हा:155, मुलख़्ख़सन)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी के ज़ाहिरी लिबास की सादगी देख कर उसे ह़क़ीर नहीं जानना चाहिये क्यूंकि हो सकता है कि वोह ''गुदड़ी का लअ़ल'' हो । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बहुत से बोसीदा कपड़े वाले ऐसे हैं कि अगर वोह किसी बात पर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम खा लें तो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उन की क़सम पूरी फ़रमाता है ।''(अल एह़सान बि तरतीब सह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, किताबुल मो'जिज़ात, बाब मिन अब्त़ल वुजूदुल मो'जिज़ात...अलख़, अल ह़दीस:6449, जिल्द: 8, स-फ़हा:139)

गुमानों से बचो :

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1340 हिजरी) ने फ़रमाया : एक मरतबा इमामे जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तन्हा एक गुदड़ी पहने मदीनए त़य्यिबा से का'बए मुअ़ज़्ज़मा को तशरीफ़ लिये जाते थे और हाथ में सिर्फ़ एक तामलोट (टीन का बतरन) था । ह़ज़रते शफ़ीक़

बल्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने देखा (तो) दिल में ख़याल किया कि येह फ़क़ीर औरों पर अपना बार डालना चाहता है। येह वस्वसए शैत़ानी आना था कि इमाम जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ ने फ़रमाया : "शफ़ीक़ ! बचो गुमानों से बा'ज़ गुमान गुनाह होते हैं." नाम बताने और वस्वसए दिली पर आगाही से निहायत अकीदत हो गई और इमाम के साथ हो लिये. रास्ते में एक टीले पर पहोंच कर इमाम ने उस से थोडा रेत ले कर तामलोट में घोल कर पिया और सय्यिदुना शफीक बल्खी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से भी पीने को फ़रमाया। उन्हें इन्कार का चारा न हुवा। जब पिया तो ऐसे नफ़ीस लज़ीज़ ख़ुश्बूदार सत्तू थे कि उ़म्र भर में भी न देखे न सुने।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ, ह़िस्सा दुवुम, स-फ़ह़ा:222)

सातवां इलाज :

अपने काम से काम रखने की आ़दत बनाइये और दूसरों के मुआ़-मलात की टोह में न रहिये, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बद गुमानी पैदा ही नहीं होने पाएगी। ***शफ़ीक़ुल मुज़्निबीन,*** अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "लोगों से मुंह फेर लो क्या तुम नहीं जानते कि अगर तुम लोगों में शक के पीछे चलोगे तो उन्हें फ़साद में डाल दोगे।"

(अल मो'जमुल कबीर, अल ह़दीस:759, जिल्द:19, स-फ़ह़ा:365)

सलामती की राह :

हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी عَلَيهِ رَحمَةُاللهِ الوَالِی (अल मु–तवफ़्फ़ा सिने 430 हिजरी) ह़िल्यतुल औलिया में लिखते हैं : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيه जब किसी बूढ़े आदमी को देखते तो फ़रमाते : "येह मुझ से बेहतर है और मुझ से पहले अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करने का शरफ़ रखता है।" और जब किसी जवान को देखते तो फ़रमाते : "येह मुझ से बेहतर है क्यूंकि मेरे गुनाह उस से कहीं ज़ियादा हैं।" और फ़रमाते : "ऐ भाइयो ! तुम पर ऐसे अम्र का इख़्तियार करना लाज़िम है कि जिस में तुम दुरुस्त हो तो अज्रो सवाब के ह़क़दार ठहरो और अगर तुम ख़त़ा पर हो तो गुनहगार न हो और हर ऐसे काम से बचो कि अगर तुम उस में दुरुस्त हो तो तुम्हें अज्र न मिले और अगर तुम इस में ख़त़ा के मुर्तकिब हो जाओ तो गुनाहगार क़रार पाओ।" उन से पूछा गया : "वोह क्या है ?" फ़रमाया : ***"लोगों से बद गुमानी रखना क्यूंकि अगर तुम्हारा गुमान दुरुस्त साबित हुवा तो भी तुम्हें इस पर अज्रो सवाब नहीं मिलेगा लेकिन अगर गुमान ग़लत़ साबित हुवा तो गुनहगार ठहरोगे।"***

(ह़िल्यतुल औलिया, जिल्द:2, स–फ़ह़ा:257, अल ह़दीस:2143)

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ***''ह़ुस्ने ज़न में कोई नुक़्सान नहीं और बद गुमानी में कोई फ़ाइदा नहीं ।''***

आठवां इलाज :

जब भी किसी से मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी पैदा हो तो ख़ुद को इस त़रह़ समझाइये कि मुझ पर इस के बात़िनी ह़ालात की तफ़्तीश वाजिब नहीं है, अगर येह वाक़ेअ़तन उसी शय में मुब्तला है जो मेरे दिल में आई तो येह इस का और इस के रब عَزَّوَجَلَّ का मुआ़-मला है और अगर येह उस शै से मह़फ़ूज़ है तो मैं बद गुमानी में मुब्तला रह कर अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क्यूं बनूं । ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम **صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : ''बेशक ज़न ग़लत़ भी हो सकता है और सह़ीह़ भी ।''

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:7, अल ह़ुजुरात तह़तुल आयत:12, स-फ़ह़ा:565)

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) फ़रमाते हैं : ''जब तुम्हारे दिल में किसी के बारे में बद गुमानी आए तो तुम्हें चाहिये कि इस की त़रफ़ ध्यान न दो और इस बात पर मज़्बूत़ी से क़ाइम रहो कि उस शख़्स का ह़ाल तुम से

पोशीदा है और जो तुम ने उस के बारे में देखा है उस में अच्छी और बुरी दोनों बातों का एह़तिमाल है।"

(एह़याए उ़लूमिद्दीन, किताब आफ़ातुल्लिसान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:186)

अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबलसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1143 हिजरी) लिखते हैं : जब किसी मुसल्मान का ह़ाल पोशीदा हो (या'नी उस के नेक होने का भी एह़तिमाल हो और बद होने का भी) तो उस से हुस्ने ज़न रखना मुस्तह़ब और उस के बारे में बद गुमानी ह़राम है। और जब मु-आ़मला बहुत पेचीदा हो जाए (या'नी न तो हुस्ने ज़न रखा जा सके और न बद गुमानी की शर-ई इजाज़त की शराइत़ पाई जाएं) तो मज़्नून को उस के ह़ाल पर छोड़ देना वाजिब है खुसूसन उस वक़्त कि जब वोह ज़ाहिरी त़ौर पर आ़दिल (या'नी नेक) हो।

(अल ह़दी-क़तुन्नदिय्या, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:16,17 मुलख़्ख़सन)

साल भर की मह़रूमी :

ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल दिमिश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जब तुम किसी को रोता हुवा देखो तो तुम भी रोव और उसे रियाकारी न समझो मैं ने एक दफ़्आ़ किसी शख़्स के बारे में येह ख़याल किया तो मैं एक साल तक रोने से मह़रूम रहा।"

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, बाब रिक़्क़त क़ुलूबुहुम व कसरति बकाइहुम, स-फ़हा:107)

नवां इलाज :

अपने क़ल्ब को सुथरा रखने की कोशिश कीजिये इस के लिये यादे मौत और फ़िक्रे आख़िरत करना बेहद मुफ़ीद है। आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत अश्शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1340 हिजरी) फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:20, स-फ़हा:231

पर हज़रते सय्यिदुना आरिफ़ बिल्लाह अहमद ज़र्रूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं : ''ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से निकलता है।''

(अल हदी-क़तुन्नदिय्या, अल ख़ल्क़ुर्राबेअ व इश्रून, जिल्द: 2, स-फ़हा: 8)

दस्वां इलाज :

जब भी किसी इस्लामी भाई के बारे में दिल में बद गुमानी आए तो उस के लिये दुआए ख़ैर कीजिये और उस की इज़्ज़त व इक्राम में इज़ाफ़ा कर दीजिये। ***हुज्जतुल इस्लाम*** इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِيْ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) इर्शाद फ़रमाते हैं : ''जब तुम्हारे दिल में किसी मुसल्मान के बारे में बद गुमानी आए तो तुम्हें चाहिये उस की रिआयत में इज़ाफ़ा कर दो और उस के लिये दुआए ख़ैर करो, क्यूंकि येह चीज़ शैतान को ग़ुस्सा दिलाती है और उसे तुम से दूर

भगाती है। शैत़ान दोबारा तुम्हारे दिल में बुरा गुमान नहीं डालेगा कि कहीं तुम फिर से अपने भाई की रिआ़यत और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर में मश्ग़ूल न हो जाओ।''

(एह़याए उ़लूमिद्दीन, किताब आफ़ातिल्लिसान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:187)

ग्यारहवां इलाज :

दिल के मुह़ासबे में कभी ग़फ़्लत न कीजिये वरना शैत़ान मुसल्सल कोशिश के ज़रीए़ बिल आख़िर बद गुमानी में मुब्तला करवा सकता है। ***ह़ुज्जतुल इस्लाम*** इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِيْ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) लिखते हैं : ''शैत़ान बा'ज़ अवक़ात मा'मूली ह़ीले से इन्सान के दिल में लोगों की बुराइयों को पुख़्ता कर देता है और उसे बावर कराता है कि ''(इन बुराइयों तक पहुंच जाना) तुम्हारी समझदारी और अ़क़्ल की तेज़ी की वजह से है और मोमिन तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है।'' ह़ालांकि ह़क़ीक़त में वोह शख़्स शैत़ान के धोके में होता है।''

(एह़याए उ़लूमिद्दीन, किताब आफ़ातिल्लिसान, जिल्द: 3, स-फ़ह़ा: 187)

बारहवां इलाज :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ***बद गुमानी*** से बचने के लिये मज़्कूरा उमूर के साथ साथ रूह़ानी इलाज भी कीजिये, म-सलन

(i) जब भी किसी से मु-तअ़ल्लिक़ बद गुमानी मह़सूस हो तो

''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط'' एक बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दें।

(**ii**) रोज़ाना दस बार ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط'' पढ़ने वाले पर शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है। (मुस्नदे अबी या'ला, मुस्नदे अनस बिन मालिक, अल ह़दीस:4100, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:400, मुलख़्ख़सन)

(**iii**) सूरए इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि उस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह ख़ुद न करे।

(अल वज़ी-फ़तुल करीमा, लि अज़्कारुस्सबाह़िय्या, स-फ़ह़ा: 18)

(**iv**) सूरतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

(**v**) जो कोई सुब्ह़ो शाम इक्कीस इक्कीस बार ''لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ'' पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसए शैत़ानी से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।

(मिअ़ातुल मनाजीह़, बाबुल वस्वसा, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:87)

(**vi**) ''هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ'' कहने से फ़ौरन वस्वसा दूर हो जाता है।

(**vii**) سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ ط اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ط وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝

की कसरत उसे (या'नी वस्वसे को) जड़ से क़त्अ़ कर देती है।

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:1, स-फ़हा: 770)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अगर अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने और दीगर एह़तियाती तदाबीर इख़्तियार करने के बा वुजूद बद गुमानी के म-रज़ से जान न छूटे तो घबराइये नहीं बल्कि मुसल्सल कोशिश जारी रखिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 505 हिजरी) फ़रमाते हैं : "अगर तुम महसूस करो कि शैत़ान, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इस का मत़लब ये है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को हमारे मुजा-हदे, हमारी क़ुव्वत और सब्र का इम्तिह़ान मक़्सूद है या'नी अल्लाह तआ़ला आज़माता है कि तुम शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ारबा करते हो या उस से मग़्लूब हो जाते हो।"

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, अल आ़इक़ुस्सालिस : अश्शैत़ान, स-फ़हा: 46, मुलख़्ख़सन)

दूसरों को बद गुमानी से बचाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अपने आप को बद गुमानी से बचाने के साथ साथ ऐसे अफ़्आ़ल के इर्तिकाब से भी इज्तिनाब की कोशिश कीजिये जिन के सबब दूसरों के बद गुमानी में मुब्तला होने का अन्देशा हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने

उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जब तीन आदमी हों तो तीसरे को छोड़ कर दो आदमी सरगोशी न करें।"

(सही़हु़ल बुख़ारी, किताबुल इस्तिअ-ज़ान, बाबुल ईतनाजी अस्नान दूनस्सालिस, अल ह़दीस: 6288, जिल्द: 4, स-फ़ह़ा:185)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1014 हिजरी) इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : "ताकि वोह येह गुमान न करे कि येह दोनों इस के ख़िलाफ़ सरगोशी कर रहे हैं।"

(मिर्क़ातुल मफ़ातीह़, किताबुल आदाब, जिल्द: 8, स-फ़ह़ा: 699)

इस के इ़लावा जब आप मह़सूस करें कि आप के किसी फ़े'ल की बिना पर कोई बद गुमानी में मुब्तला हो सकता है तो उस की रोक थाम की तरकीब कीजिये। इस सिल्सिले में चन्द हि़कायात मुलाह़ज़ा हों :

येह मेरी ज़ौजा है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में (मो'तकिफ़) थे। और आप के पास अज़्वाजे मुत़ह्हरात मौजूद थीं वोह अपने कमरों को चली गईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ठहरो मैं भी थोड़ी दूर

तक तुम्हारे साथ चलता हूं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ चले तो दो अन्सारी सह़ाबा मिले जो आप को देख कर आगे बढ़ गए। आप ने उन दोनों को बुला कर इर्शाद फ़रमाया : ''येह (मेरी ज़ौजा) सफ़िय्या बिन्ते ह़य्य है।''

उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! या रसूलल्लाह (या'नी येह कैसे हो सकता है कि हम आप से बद गुमानी करें)। आप ने इर्शाद फ़रमाया : ''शैत़ान, इन्सान के जिस्म में ख़ून की त़रह़ दौड़ता है तो मैं ने ख़ौफ़ मह़सूस किया कि कहीं वोह तुम्हारे दिल में कोई वस्वसा न डाल दे।'' (सह़ीहुल बुख़ारी, किताबुल ए'तिकाफ़, बाब ज़ियारतुल मिअ़ात...अलख़, अल ह़दीस:2038, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:669)

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 852 हिजरी) फ़त्ह़ुल बारी में लिखते हैं : ''इस ह़दीस से येह भी मा'लूम हुवा कि ऐसे कामों से बचा जाए जो किसी को बद गुमानी में मुब्तला कर सकते हों। उ-लमा व मुक़्तदा हस्तियों को तो बत़ौरे ख़ास हर उस काम से बचना चाहिये जिस की वजह से लोग उन से बद ज़न हो जाएं अगर्चे उस काम में उन के लिये ख़लासी की राह मौजूद हो क्यूंकि बदज़न होने की सूरत में लोग उन के इ़ल्म से नफ़्अ़ नहीं उठा पाएंगे।''

(फ़त्ह़ुल बारी, अल ह़दीस:2035, जिल्द:4,स-फ़ह़ा:242)

एरन्डी का तेल :

मलिकुल उ़-लमा मौलाना मुह़म्मद ज़फ़रुद्दीन बिहारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِىْ (अल मु-तवफ़्फ़ा सिने 1382 हिजरी) ''*ह़यातेआ'ला ह़ज़रत* رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه '' में रक़म त़राज़ हैं : मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِىْ का बयान है बरसात का मौसिम था, इ़शा के वक़्त हवा के तेज़ झोंके, मस्जिद के कड़वे तेल का चराग़ बार बार गुल कर देते थे, जिस के रौशन करने में बारिश की वजह से सख़्त दिक़्क़त होती थी। और इस की वजह एक येह भी थी कि ख़ारिजे मस्जिद दिया सलाई जलाने का हुक्म था। उस ज़माने में नॉर्वे की दिया सलाई इस्ते'माल की जाती थी, जिस के रौशन करने में गन्धक की बू निकलती थी, लिहाज़ा इस तक्लीफ़ की मुदा-फ़-अ़त हुज़ूर के ख़ादिमे ख़ास ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साह़िब ने येह की कि ''एक लालटेन में मा'मूली शीशे लगवा कर कुप्पी में एरन्डी का तेल डाला और रौशन कर के इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के साथ साथ मस्जिद के अन्दर ले जा कर रख दी।''

थोड़ी देर हुई कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की नज़र उस पर पड़ी, इर्शाद फ़रमाया ''ह़ाजी साह़िब ! आप ने येह मस्अला बारहा सुना

होगा कि "मस्जिद में बदबू दार तेल नहीं जलाना चाहिये।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया "हुज़ूर ! इस में एरन्डी का तेल है।" फ़रमाया "राहगीर देख कर कैसे समझेंगे कि इस लालटेन में एरन्डी का तेल जल रहा है ? वोह तो येही कहेंगे कि दूसरों को फ़त्वा दिया जाता है कि मिट्टी का बदबू दार तेल मस्जिद में न जलाओ और ख़ुद मस्जिद में लालटेन जलवा रहे हैं, हां ! अगर आप बराबर इस के पास येह केहते रहें कि इस लालटेन में एरन्डी का तेल है, तो मुज़ा-यक़ा नहीं," चुनान्चे ह़ाजी साह़िब ने फ़ौरन उस लालटेन को गुल कर के ख़ारिजे मस्जिद कर दिया।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:149)

आबे ज़मज़म :

एक मरतबा तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के इस्लामी भाई अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा ***मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे। इस दौरान आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने खड़े हो कर पानी पिया। फिर वज़ाह़त करते हुए कुछ इस त़रह़ से फ़रमाया कि "येह आबे ज़मज़म है, इस लिये मैं ने खड़े हो कर पिया और आप को बताने में मेरी एक निय्यत येह भी है कि कहीं कोई इस्लामी भाई बद गुमानी में मुब्तला

न हो जाए।''

म-दनी माह़ौल अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

बद गुमानी और दीगर ज़ाहिरी व बात़िनी उ़यूब से जान छुड़ाने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औवसाफ़ ग़ैर महसूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल ह़ुस्ने आ़क़िबत के लिये बे चैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फोह़ूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूट जाएगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़-रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

फ़ैश्नेबल नौ जवान की तौबा :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी मश्हूरे ज़माना तालीफ़ ***''फ़ैज़ाने सुन्नत''*** जिल्द अव्वल के स-फ़हा : 93 पर लिखते हैं :

कलकत्ता (हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा अ़र्ज़ करता हूं, उन का केहना है, मैं सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से बहुत दूर एक फ़ैश्नेबल नौ जवान था, एक रात घर की त़रफ़ आते हुए अस्नाए राह सब्ज़ सब्ज़ इमामों की बहारें नज़र आईं, क़रीब गया तो पता चला कि बम्बई से ***दा'वते इस्लामी*** वाले आ़शिक़ाने रसूल का एक ***म-दनी क़ाफ़िला*** आया हुवा है जिस के सबब यहां सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हो रहा है, मेरे दिल में आया कि येह लोग त़वील सफ़र कर के हमारे शहर

कलकत्ता आए हैं, इन को सुनना चाहिये लिहाज़ा मैं इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया, इख़्तिताम पर उन हज़रात ने मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले बांटने शुरूअ़ किये, ख़ुश क़िस्मती से एक रिसाला मेरे हाथ में भी आ गया, उस पर लिखा था, ***भयानक ऊंट।*** मैं घर आ गया कल पढ़ूंगा येह ज़ेह्न बना कर रिसाला रख दिया और सोने की तय्यारी करने लगा, सोने से क़ब्ल यूंही रिसाला ***भयानक ऊंट*** का जब वरक़ पलटा तो मेरी नज़र इस इबारत पर पड़ी ***"शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला ज़रूर पढ़ लीजिये*** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ***आप के अन्दर म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।"*** इस जुम्ले ने मेरी ज़बरदस्त रहनुमाई की मैं ने सोचा, वाक़ेई शैत़ान मुझे येह रिसाला कहां पढ़ने देगा, कल किस ने देखी है ! नेकी में देर नहीं करनी चाहिये, इस को अभी पढ़ लेना चाहिये, येह सोच कर मैं ने पढ़ना शुरूअ़ किया, उस पाक परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के दरबारे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर बरोज़े क़ियामत ह़िसाब देना पड़ेगा ! जब मैं ने रिसाला भयानक ऊंट पढ़ा तो उस में कुफ़्फ़ारे ना बकार की जानिब से हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तोड़े जाने वाले मज़ालिम का पुर सोज़ बयान पढ़ कर मैं अश्कबार हो गया, मेरी नींद उचट गई, काफ़ी देर तक मैं रोता रहा। रातों रात मैं ने अ़ज़्म किया कि सुब्ह़ हाथों

हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा। जब सुब्ह वालिदैन की ख़िदमत में अ़र्ज़ की तो उन्हों ने ब ख़ुशी इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी और मैं तीन दिन के लिये ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया, क़ाफ़िले वालों ने मुझे बदल कर क्या से क्या बना दिया !

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं नमाज़ी बन कर पलटा, सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर "सब्ज़" हो गया, तन म-दनी लिबास से आरास्ता हो गया, मेरी मां ने जब मुझे तब्दील होता देखा तो बेहद ख़ुश हुई और ख़ूब दुआ़ओं से नवाज़ा, अ़ज़ीज़ो रिश्तेदार सब मुझ से ख़ुश हो गए, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आजकल दा'वते इस्लामी की एक तह़सील मुशा-वरत के ***ख़ादिम*** (निगरान) की हैसिय्यत से ह़स्बे तौफ़ीक़ सुन्नतों की धूमें मचाने की सआ़दत पा रहा हूं।

आ़शिक़ाने रसूल लाए जन्नत के फूल आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो
भागते है कहां आ भी जाएं यहां पाएंगे जन्नतें क़ाफ़िले में चलो

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आ़म, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:93)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इबादात व अख़्लाक़ियात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये **72,**

इस्लामी बहनों के लिये **63** और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83** और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये **40** ***म-दनी इन्आ़मात*** सुवालात की सूरत में मुरतब्ब किये हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़्रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। हम सब को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए कार्ड पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें। ***म-दनी इन्आ़मात*** ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है! इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो :

न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि ***दा'वते इस्लामी*** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मेरे

बड़े भाई जान को ***म-दनी इन्आ़मात*** का एक कार्ड तोह़फ़े में दिया । वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से कार्ड में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बरदस्त फ़ारमूला दे दिया गया है ! ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड मिलने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को ***नमाज़*** का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के ***नमाज़ी*** बन चुके हैं, ***दाढ़ी मुबारक*** भी सजा ली और ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड भी पुर करते हैं ।

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लैलतुल क़द्र, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:1133)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इजतिमाआ़त, अ़ूरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल तक़्सीम कर के सवाब कमाइये । गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में वक़्फ़े वक़्फ़े से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये ।

मआख़ज़ो मराजेअ़

(1) कुरआन मजीद	कलामे बारी तआ़ला	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहौर
(2) कन्जुल ईमान फ़ी तर्जमतिल कुरआन	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहौर
(3) ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी मुतवफ़्फ़ा 1367 हि.	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहौर
(4) अल जामिउ़ल अह़कामिल कुरआन	मुह़म्मद बिन अह़मद कुरतुबी मुतवफ़्फ़ा 671 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(5) रूहुल मआ़नी	अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद आलूसी मुतवफ़्फ़ा 1270 हि.	दारुल एह़्याइत्तिरासिल अ़रबी
(6) अत्तफ़्सीरुल कबीर	इमाम फ़ख़ुद्दीन राज़ी मुतवफ़्फ़ा 606 हि.	दारुल एह़्याइत्तिरासिल अ़रबी
(7) सह़ीहुल बुख़ारी	इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी मुतवफ़्फ़ा 256 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या,बैरूत
(8) सुनने अबी दावूद	इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स मुतवफ़्फ़ा 275हि	दारुल एह़्याइत्तिरासिल अ़रबी
(9) अल मुस्नदु लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	इमाम अह़मद बिन ह़म्बल मुतवफ़्फ़ा 241 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(10) अल मो'जमुल कबीर	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी मुतवफ़्फ़ा 360 हि.	दारुल एह़्याइत्तिरासिल अ़रबी
(11) शुअ़बुल ईमान	इमाम अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी मुतवफ़्फ़ा 458 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(12) अल मो'जमुल अवसत़	इमाम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी मुतवफ़्फ़ा 360 हि	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(13) फ़िरदौसुल अख़्बार	ह़ाफ़िज़ शेरोया बिन शहरदार मुतवफ़्फ़ा 509 हि.	दारुल फ़िक्र बैरूत
(14) सह़ीहु इब्ने ह़ब्बान	अ़लाउद्दीन अ़ली बिन बल्बान मुतवफ़्फ़ा 739 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(15) रौज़ुर्रियाह़ीन	अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन असद मुतवफ़्फ़ा 768 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(16) मुफ़्रदात	अ़ल्लामा राग़िब अस्फ़हानी मुतवफ़्फ़ा 509 हि.	अद दारुश्शामिया बैरूत
(17) फ़तावा र-ज़विय्या	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहौर
(18) फ़तावा अम्जदिय्या	सद्रुश्शरीआ़ अम्जद अ़ली आ'ज़मी मुतवफ़्फ़ा 1376 हि.	मकतबए रज़विय्या कराची
(19) अर्रिसालतु कुशैरिय्या	इमाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़ुन कुशैरी मुतवफ़्फ़ा 465हि	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(20) तज़किरतुल औलिया	शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार मुतवफ़्फ़ा 307 हि.	इन्तिशाराते गन्जीना
(21) तम्बीहुल मुग़्तर्रीन	अ़ब्दुल वह्हाब बिन अह़मद मुतवफ़्फ़ा 973 हि.	दारुल मा'रेफ़ा बैरूत
(22) मुस्नदे या'ला	अबू या'ला अह़मद बिन अ़ली मूसिली मुतवफ़्फ़ा 307 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(23) मिन्हाजुल आ़बिदीन	इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली मुतवफ़्फ़ा 505 हि.	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत
(24) तारीख़ुल ख़ुलफ़ा	इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी मुवफ़्फ़ा 911 हि.	बाबुल मदीना कराची
(25) अव वज़ीफ़तुल करीमा	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	इदारा तह़क़ीक़ात इमामअह़मद रज़ा कराची
(26) अल ह़दीक़तुन्नदिय्या	अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाब्लिसी मुतवफ़्फ़ा 1391 हि.	पिशावर
(27) मिर्आतुल मनाजीह़	मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1391 हि.	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ लाहौर
(28) मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत	आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.	हामिद एन्ड कम्पनी लाहौर
(29) ह़याते आ'ला ह़ज़रत	मलकुल उ़लमा ज़फ़रुद्दीन बिहारी मुतवफ़्फ़ा 1382 हि.	मक-त-बतुल मदीना कराची
(30) फ़ैज़ाने सुन्नत	अमीरे अहले सुन्नत मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी	मक-त-बतुल मदीना कराची
(31) वस्वसे और उन का इ़लाज	अमीरे अहले सुन्नत मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी	मक-त-बतुल मदीना कराची

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه)

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिमि फ़ीह़कामि क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूततुल वासित़ा) (कुल सफ़ह़ात:60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात:74)

(4) मुआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़ (कुल सफ़ह़ात:41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़रफ़ाए बि एअ़्ज़ाज़े शरए़ वल उ़लमाए) (कुल सफ़ह़ात:57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ु इस्बाते हिलाल) (कुल सफ़ह़ात:63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात:100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा? (विशाहुल जीद फी तहलीलि मुआ-न-कतिल ईद) (कुल सफहात: 55)

(9) राहे खुदा में खर्च करने के फजाइल (रद्दुल कहति वल वबा-इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-कराअ) (कुल सफहात: 40)

(10) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुकूक (अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफहात:125)

(11) दुआ के फजाइल (अह्सनुल विआ-इ लि आदाबिद्दुआ मअहू जैलुल मुद्दआ लि अहसनल विआअ) (कुल सफ़ह़ात:140)

शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब

अज इमामे सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रजा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ्लुल फकीहिल फाहिम (सफहात: 74)

(13) तम्हीदुल ईमान. (कुल सफहात: 77)

(14) अल इजाजातुल मय्यिनह (कुल सफहात: 62)

(15) इका-मतुल कियामह (कुल सफहात:60)

(16) अल फदलुल मव्हबी (कुल सफहात:46)

(17) अजलल इ'लाम (कुल सफहात: 70)

(18) अज्जम-ज-मतुल क-मरिय्य (कुल सफहात:93)

(19, 20)जद्दुल मम्तारे अ़ला रद्दिल मुह्तार (अल मुजल्लिद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़हात: 570,672)

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

(21) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात:160)

(22) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात:200)

(23) तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात:33)

(24) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात:164)

(25) इम्तिहान की तैयारी कैसे करें (कुल सफ़हात:32)

(26) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़हात:43)

(27) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात:152)

(28) कामियाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात:43)

(29) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात:196)

(30) कामियाब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात: तक़रीबन 63)

(31) फ़ैज़ाने एहूयाउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात:325)
(32) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात:96)
(33) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात:50)
(34) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात:142)
(35) अरबईन ह़नफ़िय्या (कुल सफ़ह़ात:112)
(36) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात:24)
(37) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात:30)
(38) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात:124)
(39) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात:48)
(40) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से (कुल सफ़ह़ात:275)
(41) टीवी और मूवी (कुल सफ़ह़ात:32)
(42 ता 48) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(49) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात:24)
(50) ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात:106)
(51) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात:100)
(52) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िलात (कुल सफ़ह़ात:255)
(53) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमा (कुल सफ़ह़ात:24)
(54) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात:68)
(55) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात:220)
(56) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात:187)
(57) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात:62)
(58) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात:66)
(59) फैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात:120)
(60) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात:57)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(61) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुतजरर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात:743)
(62) शाहराह औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन (कुल सफ़ह़ात:36)
(63) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़ह़ात:74)
(64) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मुतअ़ल्लिम त़रीक़तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्ह़ात:102)
(65) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद) (कुल सफ़ह़ात:64)
(66) अद दा'वत इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात:148)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(67) ता'रीफ़ाते नह़विय्या (कुल सफ़ह़ात:45)
(68) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात:64)
(69) नुज़्हतुन्नज़र शरह़े नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात:175)
(70) अरबईने नववियय्या (कुल सफ़ह़ात:121)
(71) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात:79)
(72) गुलदस्ता अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात:180)
(73) वक़ायतुन्नह़व फ़ी शरह़े हिदायतुन्नह़व

(शो'बए तख़्रीज)

(74) अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात:422)
(75) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात:679)
(76 ता 81) बहारे शरीअ़त (पांच हिस्से)
(82) इस्लामी ज़िन्दगी कुल सफ़ह़ात:108)
(84) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात:274)
(85) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात:59)